Chapter. 5

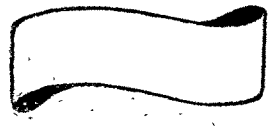

: पंचम अध्याय :

: शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित-चिंतन :

AJAY V. V. Nagar

: पंचम अध्याय :

: शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित - चिंतन :

प्रास्ताविक :

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में और विशेषतः कहानी-साहित्य के क्षेत्र में, दलित-विमर्श का प्रारंभ प्रेमचंद तथा प्रेमचंद-स्कूल के लेखकों से हुआ है, जिसका हम प्रतिपादन हम चतुर्थ अध्याय में कर चुके हैं। अब इस अध्याय में हम शैलेश मटियानी की एतद्-विषयक कहानियों को विश्लेषित करेंगे। प्रेमचंद के बाद मटियानीजी को लेने के पीछे हमारा जो मकसद है वह यह कि प्रेमचन्द के बाद कहानी के क्षेत्र में मटियानीजी को हम एक बड़े माद्दे का कहानीकार मान रहे हैं और हम ही नहीं हिन्दी

के इस क्षेत्र के अनेक आलोचक अब मटियानीजी का लोहा मानने लगे हैं । प्रेमचंद में जो मानवीय-संवेदना उपलब्ध होती है, जिसका जिक्र कभी अज्ञेयजी ने भी किया था [1], इधर हमको मटियाजी में मिलती है । जिस प्रकार प्रेमचन्द का नाम विश्व के महान कहानीकारों के बीच लिया जाता है, ठीक उसी प्रकार मटियानी का नाम भी गोर्की, चेखव, जैक द लंडन, सआदत हसन मण्टो आदि के साथ खूब आदरपूर्वक लिया जाता है । आधुनिक कथाकार और कथालोचक राजेन्द्र यादव शैलेश के संदर्भ में लिखते हैं — " मटियानी अपराजेय ~~xx~~ जिजीविषा और दुर्दम्य आस्थाओं के लेखक थे । अगर उनकी जीवनी का कोई एक नाम दिया जा सकता है तो शायद वह होगा - " आस्था और संघर्ष " । उनके पास अनुभवों का विशाल कोश ही नहीं, उन्हें छांटने और कथा-रूप में पकाने की रासा-यनिक दृष्टि भी थी । एक समर्थ भाषा तो उन्होंने अर्जित कर ही ली थी । ... दरअसल उनकी असली जमीन वही थी जहां से ये निकल भागे थे -- यानी वंचितों और दलितों की संघर्ष भरी दुनिया । यहां मुझे फुटपाथों और घूरे से उठे हुए तीन लेखकों का अनायास ही ध्यान आता है -- ~~xxxxxx~~ गोर्की, जैक लंदन और ज्यां जेने । बम्बई की जिस जिन्दगी का मटियानी बार-बार जिक्र करते हैं इन तीनों लेखकों के विश्वविद्यालय भी वहीं थे ।" [2] तो एक दूसरे कथाकार व आलोचल पंकज विष्ट मटियानी के बारे में लिखते हैं —" यह वह जमाना था जब मैं साहित्य की दुनिया से धीरे-धीरे परिचित हो रहा था । तब मैं शायद नहीं बतला सकता था कि आखिर शैलेश के किस गुण ने मुझे आकर्षित किया, पर आज मैं बतलाने की स्थिति में हूं कि इस आकर्षण का मूल वह यथार्थ था जिसकी परंपरा डिकन्स, ~~xxx~~ जोला, कुप्रिन और गोर्की से होती हुई प्रेमचंद, मंटो और मटियानी तक जाती है ।" [3] डा. महेश पाण्डे उनको "हिन्दी का अभिमन्यु " कहते हैं, हिमांशु जोशी संघर्ष के दूसरे नाम को शैलेश कहते हैं, यश मालवीय

उनको "साहित्य के होल टाइमर" मानते हैं, डा. हरीशचन्द्र पाण्डे मटियानी को "एक अनुभव पुंज" मानते है तो डा. शिवकुमार मिश्र मटियानी मृत्यु को "एक अनुभव-विश्व की क्षति" के रूप में देखते हैं। शैलेश मटियानी एक ऐसे लेखक हैं जो आपको बता सकते हैं कि लेखक होना क्या होता है, या शैलेश मटियानी के मायने क्या है। [4]

यही कारण है हमने दलित-विमर्श के संदर्भ में शैलेश को चुना है। प्रेमचन्द और शैलेश के बीच और भी कई कहानियां है, जैसे यशपाल कृत "दुःख" और "परदा"; उपेन्द्रनाथ अश्क कृत "डाची" और "ताई"; जैनेन्द्र कृत "अपना अपना भाग्य", वृन्दावनलाल वर्मा कृत "शरणदाता", डा. शिवप्रसाद सिंह कृत "तकावी", महादेवी वर्मा कृत रेखाचित्रनुमा कहानी "घीसा", धर्मवीर भारती कृत "गुल की बन्नो", अमरकान्त कृत "दोपहर का भोजन"; रेणु कृत "रसप्रिया", "लाल पान की बेगम", "पंचलैट", "ठेस", "सिरी पंचमी का सगुन"; मार्कण्डेय कृत "दूध और दवा", मोहन राकेश कृत "मलबे का मालिक" और "एक और जिन्दगी"; रमेश बक्षी कृत "शबरी", परसाई कृत "भोलाराम का जीव", भीष्म साहनी कृत "भाई रामसिंह", शेखर जोशी कृत "कोसी का घटवार" आदि-आदि। इन कहानियों में दलित-विमर्श के नाना आयाम दृष्टिगोचर होते हैं। यहां हमारा उपक्रम मटियानीजी की उन कहानियों का परीक्षण है जिनमें दलित-विमर्श या चिंतन उपलब्ध होता है।

§1§ नंगा :

"नंगा" दलित-जीवन की भयंकर त्रासदी को रूपायित करने वाली कहानी है। कहानी की नायिका रेवती शिल्पकारिन है। कुमाऊं प्रदेश में चमार या अछूत को शिल्पकार भी कहते हैं। उनकी गणना दलितों के अन्तर्गत ही होती है। रेवती का पति

हरिराम गुमानी ठाकुर का हलवाहा था । गुमानी ठाकुर को हरिराम की बीमारी के विषय में मालूम था और वह यह भी जानता था कि वह इस दुनिया में अब कुछ महीनों का मेहमान है । गुमानी ठाकुर की नज़र हरिराम की औरत पर थी । अतः सब स्थितियों पर ~~पूरी~~x पूरी तरह सोच-विचार कर वह अपने हलवाहे को शुरू से ही शिल्पकार बस्ती से दूर मकान बनाने के लिए जमीन देता है और इस प्रकार वह अपनी औरत के साथ उस नये मकान में रहने चला जाता है । ठाकुर यह सब इसलिए करता है कि शल्पकार बस्ती में वह हरिराम की औरत के साथ वह सबकुछ नहीं कर सकता जो वह करना चाहता है । हरिराम की मृत्यु के बाद ठाकुर रेवती को अपने मोहजाल में फांसता है । रेवती ठाकुर के आसरे थी , अतः ठाकुर के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है और एक प्रकार से उसकी रखैल बनकर जीवन-यापन करती है । ठाकुर को तो एक मुफ्त की नौकरानी मिल जाती है । "गोदान" की सिलिया की भांति वह भी अपने को मालकिन समझने लगती है । इसी सबमें रेवती को ठाकुर का गर्भ रह जाता है । ठाकुर घरेलू दवाइयां भिजवाता है पर गर्भ गिरता नहीं है । अन्ततः यह तय होता है कि रेवती बच्चे को जन्म तो दे पर जन्म के तुरंत बाद बच्चे को कोसी नदी में बहा दे । आखिर के दो-तीन महीने जब पेट दिखने लगता है तब रेवती बीमारी का बहाना बनाकर घर में ही पड़ी रहती है । लेकिन बच्चे को जन्म देने के बाद उसका मोह , उसका दूध , जोर मारता है और वह बच्चे को कोसी में नहीं बहाती । औरत रेवती , स्वार्थी और विलासी रेवती कहीं पीछे छूट जाती है और "महतारी" रेवती की जीत होती है । भला ठाकुर यह सब कैसे बर्दाश्त करता ? वह साम, दाम, दण्ड , भेद सभी आजमा लेता है ; पर रेवती है कि अपने इरादे पर चट्टान की मानिंद खड़ी रहती है और ठाकुर जितना ज्यादा हाथ-पैर मारता है , रेवती के इरादे उतने ही बुलंद होते जाते हैं । अब रेवती अपने बच्चे के भविष्य के लिए

पंचायत बुलाती है । पर गुमानी के पास सत्ता थी, वह संपन्न था । वह अपनी ताकत के बूते पंचायत के सब सदस्यों को अपनी ओर कर लेता है, पर रेवती का बचिया ससुर रेवती के पक्ष में रहता है । वह बिकता नहीं है । लेकिन अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, अतः एकतरफा फैसला होते देख वह पंचायत से उठकर चला जाता है । पंचायत रेवती को माफीनामे पर अंगूठा लगाने के लिए कहती है । तब रेवती का जो पुण्य-प्रकोप है वह सुनते बनता है : "पंच महाराज लोगों, हंसों की पांत तो जरूर गू खागयी ; मगर कौवे की जात अपना धर्म नहीं छोड़ेगी । जिस दगाबाज ने थूक के चाट लिया, उसकी जमीन में पांव रखने से मर जाना बेहतर । होगा कहीं ईश्वर, तो कभी-न-कभी मेरा इन्साफ़ वही करेगा । मैं तो अपनी संतान की हत्या खुद नहीं करूंगी । .... ठकुरानी नहीं, शिल्पकारनी हूं । मिहनत -मजदूरी से गुजर करूंगी । मगर, हूं अगर मैं, हरराम हरराम की घरवाली और इस नस्वा की महतारी ... पी रखा है मैंने भी अगर अपनी महतारी का दूध — तो आज के दिन से इस गुमानी ठाकुर की जमीन और मकान में हगने-मूतने भी नहीं जाऊंगी ।[5]

इस प्रकार भरी पंचायत में न केवल गुमानी ठाकुर को, बल्कि सभी पंचों को भी वह "नंगा" कर देती है । इस कहानी के द्वारा लेखक यह व्यंजित करना चाहते हैं कि बड़े लोग दलित जाति के लोगों को अपनी हवस का शिकार बनाते हैं और फिर धूल झाडकर खड़े हो जाते हैं । दूसरी बात यह कि जीवट और जुझारूपन जो दलित जाति की स्त्रियों में मिलता है, ऊंची जातियों की स्त्रियों में उसका प्रायः अभाव-सा होता है ।

§2§ प्रेतमुक्ति :

मटियानीजी की यह एक बहुचर्चित कहानी है । राजेन्द्र यादव ने समकालीन कहानियों का जो संपादन " एक दुनिया समानांतर" में किया है उसमें उन्होंने मटियानीजी की इस कहानी को स्थान दिया

है । कहानी का नायक किसनराम है । वह केवल पांडे का बचपन का साथी और उसका हलिया है । केवल पांडे खेती के अलावा पुरोहिती भी करते हैं । किशनराम के केवल पांडे से घरेलू संबंध है । यहां उत्पीड़न की कोई बात नहीं है । किशनराम की शादी भवानी नामक एक स्त्री से हुई थी । किशन एक सीधा-सादा और मेहनती आदमी है, दूसरी ओर भवानी बड़ी ही मद-मस्त, अल्हड़ और शौकीन तबियत नारी है । अतः वह किशनराम को छोड़कर किसी दूसरे का घर कर लेती है । किशनराम केवल पांडे को जब-तब अपनी सद्गति के लिए कोई अनुष्ठान करने की बात करता रहता है । पांडे ने भी हामी भरी थी कि उसकी मृत्यु के बाद वे उसकी "सद्गति" का उपचार करेंगे । एक दिन पांडे कहीं बाहर से आ रहे थे कि उन्होंने घाट पर दूरसे किसीका अग्नि-संस्कार देखा । नदी पार करके वहां पहुंचे तो सब लोग जा चुके थे । यह घाट अछूतों का था । कई दिनों से किशन बीमार चल रहा था, अतः पांडे को शंका होती है कि कहीं किशन ही तो नहीं मर गया । पांडे ने वहां किशन की टोपी भी पड़ी पायी । पांडे को पक्का विश्वास हो गया कि किशन ही गया । उन्हें अपना वादा याद आया । अतः तुरंत वे उसकी "सद्गति" के लिए मंत्रजाप करते हैं और उसकी विधि करते हैं । बाद में केवल पांडे अपने घर जाते हैं और अचानक उनको याद आता है कि दूसरे दिन पिता का श्राद्ध था । एक शूद्र का तर्पण करने के बाद पिता का श्राद्ध कैसे किया जाय उसके उहापोह में पांडे परेशान थे कि अचानक उनको किशनराम दूर से आता हुआ दिखायी पड़ा । उसने छूटते ही बताया कि कल उसकी सौतेली मां मर गयी । इसके साथ ही पांडे के मन का द्वन्द्व भी समाप्त हो गया क्योंकि जीवित ~~xxxxxxx~~ व्यक्ति की विधि थोड़े होती है । मानो पांडे की अपने भीतर के "प्रेत", शंका-कुशंका के "प्रेत" से मुक्ति हो गयी । कहानी का शीर्षक इसीलिए "प्रेतमुक्ति" है ।

परन्तु किशनराम बार-बार जो अपनी मुक्ति और सद्गति की जो बात करता है उसके पीछे क्या कारण है ? वस्तुतः कहानी का कहानीपन तो वहां है । किशनराम की सौतेली मां बहुत ही कलिहारिणी थी । उसने किशनराम के पिता को बहुत ही परेशान और दुःखी किया था । अतः मरने के बाद किशन के पिता का प्रेत सौतेली-मां को बहुत हैरान करता था । किशन अपनी पत्नी को अत्यन्तिहा प्यार करता था । भवानी छोड़कर चली गयी । पर किशन का उसके लिए प्यार कम न हुआ । वह हमेशा उसका भला ही चाहता रहा । इधर उसकी आत्मा भवानी के लिए बहुत ज्यादा कलपती थी । भवानी के प्यार में उसने दूसरी शादी भी नहीं की थी । अतः वह सोचता है कि वह जीते जी तो भवानी का बुरा नहीं चाहेगा , पर मरे बाद यदि उसकी सद्गति न हुई और वह प्रेतयोनि में गया और वह प्रेत यदि भवानी को लग गया तो क्या होगा ? यथा — " महाराज आजकल जो तड़प रहा हूं , तो इसलिए कि म्लेच्छ योनि का पहले ही ठहरा , ऊपर से यह संसारी कुटिल चित्त की हाय-हाय है , गरुड़-पुराण सुनने से का तो पहले ही हक नहीं ठहरा ... महाराज अपने तरण-तारण की उतनी चिन्ता नहीं है ... मगर आत्मा इसी पाप से डर से है , कि कहीं प्रेत-योनि में गया , तो उस भौनी (भवानी) छोरी को न लग जाऊं ? हमारी सौतेली महतारी में हमारे बाप का प्रेत आता है और महाराज ! उसे उसके लड़के गरम चिमटों से दाग देते हैं ... कहीं उसके लड़के भी उसे ऐसे ही न दागें ।"[6]

(3) घुघुतिया त्यौहार : त्यौहार

यह एक दलित-चेतना संपन्न कहानी है । कुमाऊं प्रदेश में एक त्यौहार आता है जिसे लोग "घुघुतियात्यौहार" त्यौहार " कहते हैं । उस दिन कौवों को पूड़ी और खीर खिलाई जाती है । गुजरात में श्राद्धपक्ष में ऐसा होता है । उस दिन कई बार कौवों की

किल्लत हो जाती है । लोगबाग कौवों को बुलाते हैं पर कौवे मिलते नहीं हैं ।

यहां कहानी का शीर्षक " घुघुतिया त्यौहार " इसलिए है कि कहानी का नायक देबराम ठाकुर कल्याणसिंह के शब्दों में "घुघुतिया त्यौहार का कौवा बना हुआ है । देबराम शिल्पकार है और ठाकुर का हलवाहा है । ठाकुर की एक पुकार पर दौड़ा-भागा ~~xxxx~~ जाने वाला देबराम आज कई बार पुकारे जाने पर भी ठाकुर के यहां नहीं जाता है । बात यह है कि ठाकुर ने अपनी भतीजा-बहू लक्ष्मी ठकुरानी की कुछ जमीन को हड़प लिया है और उसी मामले को लेकर आज पुरोहित जयवल्लभ गुरु के आंगन में पंचायत बैठने वाली है । उस पंचायत में देबराम भी एक पंच के रूप में बैठने वाला है । इधर स्वाधीनता-संग्राम के आंदोलनों के कारण देश में दलित जाति के लोगों को जो अधिकार मिले हैं उनके तहत दलित तबके का भी एक सदस्य पंचायत में अवश्य होता है । "नंगा" कहानी में भी पंचायत की बात आयी है । उसमें रेवती का चचिया ससुर पंच में आया है । इसी अधिकार की रूसे देबराम आज पंचायत में बैठनेवाला है । ठाकुर सोचता है कि देबराम तो उसका अपना आदमी है । उसके पक्ष में ही बोलेगा पर देबराम जो कहता है उससे ऐसा लगता है कि वह न्याय का ही पक्ष लेगा । यथा -- " सो तो आप साईं-गुसांई ही ठहरे , थोकदार ज्यू । आप नहीं तो फिर कौन ठहरा हमारी जताने वाला ? मगर मैं इस समय तो आपके साथ नहीं ही चल सकता । सरपंच पद्मावत ने मुझसे कह रखा कि पंचायत के समय आदमी भेजकर बुला लेंगे । और जहां तक पक्ष लेने का सवाल हुआ , तो पंच का आसन धरमराज का आसन होता । वहां पर तो न्याय , इन्साफ का ही पक्ष लेना पड़ता , इस धरमशास्तरी बात को तो आप हमसे ज्यादा जानने वाले हुए ।" 7

राजनीतिक अधिकारों से दलितों में जो चेतना आयी है

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
PITh
1142

उसे हम यहाँ लक्षित कर सकते हैं । प्रस्तुत कहानी का देबराम जागरूक और दलित-चेतना संपन्न व्यक्ति है । वह अपने जाति-बांधवों को भी समझाता है कि वे अपने बच्चों को पढ़ावें । इस संदर्भ में कहानी के अन्तर्गत लेखक की जो एक टिप्पणी है वह ध्यान देने योग्य है :

"देबराम की आँखों में आजकल एक और सपना तैरने लगा है । अगर उसका बेटा चेतराम हाईस्कूल भी पास कर ले और कभी पटवारी-पेशकार बनकर इसी प्रहxx पट्टी में आ जाए , तो उसका सिर औरों से हाथ-भर ऊंचा हो जाएगा । आज जो ठाकुर-ब्राह्मण उसे "डूमड़ा-डूमडा " कहते हैं , कल वही नमस्कार करने लग जाएंगे । जब-जब उनकी गरज पड़ेगी , चेतराम को "पटवारीज्यू" "पेशकारज्यू" कहते फिरेंगे । देबराम की अवमानित आत्मा उसे कचोटती और वह चाहता कि उसकी जात-बिरादरी के लोग भी इस चाकर परंपरा से मुक्ति पाएं । वह अक्सर अपने बिरादरों से प्रहसx कहा भी करता - "यारो ! एक जानवर तो होते हैं घास खाने वाले , मगर अन्न खाने वाले जानवर हमीं लोग ठहरे । अगर शिक्षा नहीं हुई , सिर अंबxx ऊंचा करके चलने का अभिमान नहीं हुआ , और जात-बिरादरी को आगे बढ़ाने की कामना नहीं हुई , तो घास और अन्न में फर्क ही क्या हुआ ?" 8

कहानी का दलित-विमर्श अपने आप में स्पष्ट है । देबराम घुघुतिया त्यौहार का कौवा नहीं मानसरोवर का हंस साबित होता है ।

§5§ सतजुगिया आदमी :

"सतजुगिया आदमी" कुमाऊं प्रदेश के शिल्पकारों में इधर जो परिवर्तन आया है , उसे रूपायित करने वाली कहानी है । कहानी कुल जमा यह है : केशवानंदजी गांव के पंडितजी महाराज हैं । उनकी भैंस मर गई है और कोई भी चमार उसको खींचने के लिए तैयार नहीं है । हरराम का बेटा परराम सभी शिल्पकारों का नेता बना हुआ

है । वह पूरे गांव में कहता फिरता है कि अब कोई भी शिल्पकार ये सब काम नहीं करेगा जिनके कारण ये ऊंची जाति के लोग उनसे घिनाते हैं । फलतः गांव का कोई भी चमार उनकी भैंस को खींचने नहीं जाता । इधर केशवानंद और पद्मावती बौराणीज्यू परेशान । किन्तु परराम के पिता हरराम पुरानी पीढ़ी के हैं । "सद्गति" कहानी के दुखिया की भांति बड़े धर्मभिरू हैं और ब्राह्मण को देवता मानते हैं । उनको आशंका है कि कहीं केशवानंद महाराज गुस्से में आकर उनके बेटे परराम को अभिशाप न दे डालें । फलतः अपनी ~~हर्ष~~ ही पीढ़ी के एक साथी कमलराम को लेकर पंडितजी के यहां पहुंचते हैं । पहले तो पद्मावती बौराणीज्यू बहुत बरसती है, पर फिर हरराम की विनयवाणी सुनकर पसीजती हैं और कहती हैं — " शाबाश हरराम शाबाश । आखिर कुछ भी हो, तू सतजुगिया आदमी है । अब तो इस संसार में से सारे धरम-करम उठते ही चले जा रहे हैं । अपने-अपने कुल-धर्म को लोग तिलांजलि देने लग गये । अरे, सत्य-धर्म ही नहीं रहेगा, तो शेषनाग भगवान को कहां से आधार मिलेगा । थोड़ा-बहुत जो कुछ भी धरम-करम शेष है, वह पुराने समय के लोगों में ही रग गया ~~है~~xxxx हर राम । " 9

हरराम और कमलराम दोनों बूढे थे । भैंस को खींचने में हरराम का दम फूल जाता है और यह "सतजुगिया आदमी" मर जाता है । प्रेमचंद की कहानी "सद्गति" ~~अशेष~~ के दुखिया चमार और हरराम दोनों में एक बात सामान्य है और वह यह कि दोनों ब्राह्मण-देवता के कोप से डरते हैं और इसी डर में अपनी शक्ति-सीमा से ज्यादा श्रम करने में दम तोड़ देते हैं । जिस प्रकार "~~सद्~~ " सद्गति" कहानी के शीर्षक में व्यंग्य है, इस कहानी के शीर्षक में भी व्यंग्य है । छोटी जातियों में धर्म और शास्त्र, जिसे वे जानते तक नहीं है, को लेकर जो डर और आतंक है, वही इन ऊंचे सवर्ण लोगों की ताकत है । जिस दिन

यह डर निकल जायेगा उनके तथाकथित "सतयुग" का अंत आ जायेगा । जितने भी दलित लेखक हैं या इस विचारधारा से जुड़े हुए लोग हैं, इस तथाकथित " कलियुग" को कोसते नहीं हैं, बल्कि वे तो इस युग की बलैयां लेते हैं ।

§5§ लीक :

यह एक विनोद-प्रधान व्यंग्य कहानी है । इसमें लेखक ने अंतर्जातीय विवाह की समस्या को लिया है । अन्तर्जातीय विवाहों में हमारे यहां ऐसे विवाह तो अब होने लगे हैं जिनमें वर उच्च जाति का हो और कन्या मध्य या नीच जाति की हो । परंतु ऐसे अन्तर्जातीय विवाह जिसमें कन्या तो उच्च जाति की हो और वर निम्न जाति का हो, अभी भी बहुत कम देखने में आते हैं । और जहां ऐसे विवाह होते हैं वहां प्रायः लड़का खूब पढ़-लिखकर ऊंचीऊंचे ओहदे पर पहुंचा हुआ होता है । अपने उपन्यास "नागवल्लरी" में भी मटियानीजी इस प्रकार का एक विवाह बताते हैं । उसमें कृष्णा मास्टर जो डोम जाति के हैं, उनका विवाह गायत्री ठकुराइन से करवाया गया है । अभी हाल में ही रीलिज़ फिल्म "बनारस" में भी इसी विषय-वस्तु को उठाया गया है ।

कुमाऊं के डुंगरी गांव के ठाकुर गोपालसिंह का जर-जमीं-जोरू तीनों मामलों में कोई सानी नहीं है । ठाकुर गोपालसिंह के पिता ठाकुर किरपाल सिंह ने अपनी पुत्री कलावती के लिए अलमोड़ा के सबलसिंह बौर के यहां से आये हुए रिश्ते को ठुकरा दिया था, क्योंकि बौर को वे अपने से कुछ निम्न समझते थे । जातियों में भी ऊंच-नीच का संस्तरण होता है । कई बार एक ही जाति में कुछ लोग ऊंचे और कुछ लोग नीचे समझे जाते हैं । गुजरात में अमीन पटेल दूसरे पटेलों से ऊंचे माने जाते हैं । उसी तरह सबलसिंह भी ठाकुर ही थे परंतु किरपालसिंह से जातिगत संस्तरण में वे थोड़े नीचे स्तर पर आते थे । सबलसिंह बौर धन-दौलत के मामले में

किरपालसिंह से इक्कीस थे , लेकिन जाति-कुल के मामले में थोड़े उन्नीस पड़ते थे और किरपालसिंह अपनी लीक छोड़ना नहीं चाहते थे । पर उनके सुपुत्र ठाकुर गोपालसिंह को लीक छोड़नी पड़ रही थी । कारण ? पुत्री-मोह । उनकी लाड़ली बेटी जानकी प्रोफेसर कुंडलनाथ से विवाह करना चाहती है और लगभग विद्रोहात्मक शैली में अपनी सौतेली मां (कैंजा) को कहती है कि अगर "बौज्यू" ने इस मामले में हठवादिता दिखायी तो वह गोली खाके मरने वाली नहीं है , अपनी राजी-खुशी वह कुंडल के साथ चली जायेगी । गुजराती में एक कहावत है — " जिसको कोई नहीं पहुंचता उसको उसका पेट पहुंचता है । " ठाकुर गोपालसिंह को भी बेटी की जिद के आगे घुटने टेकने पड़ते हैं । कहां तो उनके पिता बाहर में अपनी बेटी नहीं देना चाहते थे और यहां बेटी नाथों में जा रही थी । कुंडल कनफटा नाथ था । कुमाऊं में नाथों की गिनती छोटी जातियों में होती है । उसका पूरा कुनबा कई पीढ़ियों से जुआरियों और शराबियों का रहा है । परन्तु कुंडल मिडिल पास करके इलाहाबाद जाता है और कालेज में प्रोफेसर बनकर लौटता है । पूरे अल्मोड़ा ज्वार में "प्रोफेसर कुंडलनाथ , प्रोफेसर कुंडलनाथ " होने लगता है और जानकी नाइन्थ पास सयानी लड़की है और प्रोफेसर को दिल दे बैठती है । पंडित कीर्तिवल्लभ पहले कुछ नना-नुच करते हैं , परंतु बाद में एक अच्छा असामी हाथ से निकल जायेगा इस डर से कुछ अगर-मगर के साथ तैयार हो जाते हैं । गोपालसिंह कुंडलनाथ को बुलाकर कुछ अपने पितर-लीक की बात कहते हैं कि शादी शानो-शौकत से हो , बारात बज्योली से न आकर अलमोड़े से आवे , बारातियों में कनफड़े नाथ ज्यादा न हों , प्रोफेसर-मास्टर आदि ज्यादा हों । कुंडल आज्ञाकारी दामाद की भांति यह सब मान लेता है । उससे गोपालसिंह की बांछे खिल जाती है । पर फिर कुंडल गंभीर होकर अपने पितर-लीक की बात कहता है —" मगर जब बारात आपके यहां से बिदा होकर , मेरे घर

पहुंच जायेगी , तब मैं भी अपनी पितर-लीक पर चलूंगा , क्योंकि हर आदमी के लिए अपने पितरों -पुरखों की लीक पर चलना एक गौरवपूर्ण स्थिति होती है । तो मैं यह प्रोफेसरी और प्रतिष्ठा की जिन्दगी छोड़कर जुआरियों-शराबियों और चरित्रहीनों की मंडली में जाऊंगा , और अपने बाप-दादाओं की लीक पर चलते हुए , खूब जुआ खेलूंगा , खूब शराब पिऊंगा और खूब ...' 10

इस प्रकार कुंडलनाथ ठाकुर गोपालसिंह को उनके ही तर्कों से निरस्त्र कर देता है , क्योंकि वह एक स्वाभिमानी व्यक्ति है और ठाकुर की झूठी अकड़ के सामने झुकना नहीं चाहता है । कहानी के द्वारा लेखक यह स्थापित करना चाहते हैं कि दलित जाति के लोग पढ़-लिखकर यदि अंतर्जातीय विवाह करते हैं तो उससे जाति-प्रथा पर कुठाराघात हो सकता है । डा. बाबासाहब अम्बेडकर भी इसी मत के थे ।

§6§ महाभोज :

यह कहानी "छिद्दा पहलवान वाली गली " तथा " भविष्य तथा अन्य कहानियां " इन दोनों कहानी-संकलनों में पायी जाती है । इस कहानी की नायिका शिवरती एक जुझारू , जीवटवाली और परिश्रमी तथा संवेदनशील नारी है । उसका पति बेतराम शराबी-कबाबी है । उसकी नौकरी छूट गयी है और सात महीनों से मियादी बुखार में पड़ा है । बेतराम का बाप भी आखिरी घड़ियां गिन रहा है । शिवरती के चार बच्चे हैं और पांचवा अभी आने वाला है । बेतराम को शरीर -सुख की इच्छा होती है तब शिवरती कहती है — " मोती के बापू , दम तोड़ते बाप की नरक के नीचेयह बेहयाई ठीक नहीं । आने-औलाद पर बुरा असर पड़ता है ।" 11 बेतराम शिवरती को कुछ कह नहीं सकता , क्योंकि वह एक भली औरत है और "जूतों का मारा हुआ सिर उठा सकता है , भलमनसाहत

का मारा नहीं " ।[12] चेतराम जब शिवरती से कुछ पैसे मांगता है कि जी बहुत वैसा हो रहा है तो मीरगंजवाली सलीमा § एक वेश्या § के पास हो आऊं, तो शिवरती बिना कुछ बोले तीन रूपये उसके हाथ पर रखते हुए कहती है — " तुममें लम्बी बीमारी के मारे अब बर्दाश्त भी तो ना रही ।"[13] और जब चेतराम का बाप मर जाता है तब अपनी पचास तोला चांदी की करधनी बेचकर उसका सारा क्रियाकर्म भलीभांति निबटाती है — " मोती के बापू, अपने पेट का रोना तो जिनगी-भर का लबा हैगा, मगर बाप तो रोज-रोज नहीं मरेगा न ? जिस औरत के जीते-जी उसके मरद की नाक जाती रहे, उसका तो बावड़ी में डूब मरना भला । तुम कोई फिकर मती करो ।"[14]

क्या कहा जाए इस औरत को — सती, देवी, करुणा की मूर्ति ? जो अपने मरद के जी बिलमाने पर उसे वेश्या के पास जाने के लिए पैसे देती है । खुद पेट से है उसकी इच्छा को पूरी नहीं कर सकती । दूसरे पति का बाप बीमार है । उस समय चेतराम का ऐसा करना क्या ठीक रहेगा ? यह सब सोचने वाली । पति बेकार है । खुद मेहनत-मजदूरी करके सबके पेट पालती है और साथ ही पति की मर्यादा का भी ध्यान रखती है । लोगों के आगे उसकी हेठी न दीखे । बिरादरी को मरे बाद का भोज देती है, सच ही यह भोज नहीं, "महाभोज" है । शिवरती को पढ़कर मंजुल भगत की "अनारो" स्मृति में लहराने लगती है । इस कहानी के माध्यम से शैलेश भी प्रेमचंद की भांति शायद कहना चाहते हैं कि दलित-वर्ग में भी ऐसे महान पात्र हो सकते हैं । ये मूलिया, ये तुलिया, ये गौरा, ये शिवरती और कहां मिलेगी ?

§7§ एक कप चा : दो खारी बिस्किट :

यह मुंबई की झोंपड़पट्टी के परिवेश पर आधारित कहानी है । यहां दो-दो , तीन-तीन रूपये में शरीर का सौदा करने वाली वेश्याएं पायी जाती हैं । पेट की भूख के लिए , कई बार तो अपने भाई या बाप का पेट पालने के लिए , अपना शरीर बेचने वाली ये औरतें , ये लड़कियां , अपने अन्तर्मन में कितनी दीप रही है , उनका भीतह कितना पाक और साफ है , यह तो वही लेखक बता सकता है जिसने अपनी रातें कभी फुटपाथों पर काटी हो । और मटियानी जैसा कि पहले भी कहा गया है इन फुटपाथिया विश्व-विद्यालयों के छात्र (?) रह चुके हैं ।

प्रस्तुत कहानी का कथा-नायक रामन्ना नारी को दोरूपों में बांटता है -- फन्टूसी और मायूसी । वैभव-विलासिता में डोलने-वाली विपुलवासनावतियों को वह फन्टूसी कहता है और अपना या बच्चों का पेट पालने के लिए शरीर का सौदा करने वाली वेश्याओं को वह मायूसी कहता है । मीठाभाई मेन्शन की पांचवीं मंजिल पर रहनेवाली वीरमगाम वाली सेठानी जलोदाबेन "फन्टूसी" की कोटि में आती है , तो एक कोप चा दो खारी बिस्किट के लिए शरीर का सौदा करने वाली नसीम "मायूसी" की कोटि में आती है । जम्मू दादा नसीम को बिरयानी कोफ्ता खिलाने की बात करता है , पर वह उसके साथ नहीं जाती , क्योंकि वह रामन्ना को प्यार करती है । पर रामन्ना कहता है कि उसके पास तो एक-मात्र "चौन्नी" (दुअन्नी -- सन् 1950 के आसपास दो आने का सिक्का जो चौकोर होता था) थी । वह नसीम को उन पैसों से पातल-भाजी खाने के लिए कहता है । तब तीन दिन से भूखी नसीम कहती है -- " ऊं हूं , अकेले कुछ नहीं खाऊंगी । चलो , पहले तुम मेरे साथ मुहब्बत करो , फिर एक कोप चा दो खारी बिस्किट ले लेंगे ... अद्धा कप तुम पीना , अद्धा कप मैं पीऊंगी ... एक बिस्किट तुम खाना , एक मैं खाऊंगी ... मगर पहले चल पुल के नीचे सोएंगे ... मुहब्बत करेंगे । " [15]

और तब अचानक रामन्ना को अपनी बहन करावा की याद आती है । जब रामन्ना को पता चलता है कि उसकी बहन करावा कई व्यक्तियों के साथ सो चुकी है, तब वह उसे जली-कटी बातें सुनाता है । उसके जवाब में करावा ~~xxxxx~~ कहती है — "दुनिया वाले मुझ पर थूकते होंगे, पर मैं तुम्हारे मुंह पर थूंकती हूं, कि तुम्हारे जैसा भैसे — हाथी सरीखा भाई होते हुए भी मुझे रोटियों के लिए तन का सौदा करना पड़ता है, मन का खून करना पड़ता है।"[16] इतना कहकर करावा नागपुर एक्सप्रेस की ओर दौड़ चली थी और फिर रामन्ना को उसकी लाश ही मिली थी । करावा की स्मृति के कारण रामन्ना भावुक हो उठता है और नसीम को अपनी बहन बना लेता है ।

(4) दो दुःखों का एक सुख :

इसमें अल्मोड़ा का परिवेश है । अल्मोड़ा के मंदिरों के सामने तीन भिखारी भीख मांगते रहते हैं और गाते रहते हैं — "साधो, करमगति किन टारी" — ये तीन भिखारी हैं : मिरदुला कानी, करमिया कोढ़ी और एक अन्धा सूरदास । मिरदुला कानी है, उसके मां-बाप, सगे-रिश्तेदार कौन है, कोई नहीं जानता । करमिया को रक्तपित्त हुआ है और सूरदास अन्धा है । तीनों में अगर कोई समानता है तो वह यह कि तीनों हमपेशा हैं — भिखारी । एक खण्डहर जैसे मकान में ये पड़े रहते हैं । साथ रहने के कारण करमिया और सूरदास दोनों मिरदुला कानी को चाहते हैं और प्रायः इसके लिए ये झगड़ते भी रहते हैं । जिस प्रकार की पतित जिन्दगी ये जी रहे हैं, उसमें दूसरा कोई विकल्प भी नहीं है । अभी हमारे समाजशास्त्रियों को इस प्रकार के संबंधों का विश्लेषण करना होगा । ऐसे में मिरदुला को गर्भ रहता है । तब वह बच्चा किसका होगा उसको लेकर भी इन लोगों में बहस चलती रहती है और दोनों चाहते हैं कि बच्चा उनके जैसा हो ।

करमिया चाहता है कि बच्चा कोढ़ी हो और सूरदास चाहता है कि बच्चा उसकी तरह अंधा हो । लेकिन दाई जब कहती है कि बच्चा तो एकदम चोखा है , तब दोनों हतप्रभ-से रह जाते हैं । दाई कहती है —" भगवान की माया कौन जान सका । कोढ़ी-अंधों की औलाद और दीये जैसी जोत देती आँखें । गोरा-चिट्टा रंग । अच्छा हुआ कानी पर ही गया बच्चा ।" [17]

§9§प्यास :

"प्यास" मुंबई के परिवेश पर आधारित कहानी है । इसमें भी मुंबई की झोंपड़पट्टी के लोगों की पतित जिन्दगी का चित्रण है । दारू , मटका , उठईगिरी , जेब-कटाई आदि का माहौल इसमें यथार्थतः चित्रित हुआ है । ये दलितों के भी दलित हैं । इसमें शंकरिया नामक एक पाकिटमार एक पारसी महिला की चेन तोड़ने का प्रयत्न करता है , पर उसमें असफल रहता है । ग्रान्ट-रोड़ चौकी की पुलिस उसकी खूब धुनाई करती है । पुलिस की मार से वह बेहोश हो जाता है । उसकी बेहोशी में उसे अपने जीवन के कुछ प्रसंग और सुनी हुई बातें याद आती है । वस्तुतः पांडुरंग मामा उसे अनाथाश्रम से भान्जे का रिश्ता बताकर नकद पचास रूपये में खरीद लाये थे । पांडुरंग मामा का यह बिजनेस है । उन्होंने मुंबई में बड़े पैमाने पर "भिखारियों का यह बिजनेस " फैला रखा है । अपनी अट्ठावन साल की उम्र में दस साल खुद भीख मांगकर और बत्तीस साल दूसरों से भीख मंगवाकर उन्होंने मुंबई में अपना दो-मंजिला मकान बना लिया है । एक बीड़ी बनाने का कारखाना भी चला रहे हैं । पचास लड़के उन्होंने इस व्यवसाय में छोड़ रखे हैं । मुर्दाघर से मुर्दे लाकर , उस पर रोने वाले बिठाकर भीख के पैसे इकट्ठे किये हैं । हररोज दारू पीते हैं और अपनी रखैल ताराबाई के साथ ऐश करते हैं ।[18]

शंकरिया कक्के को कृष्णाबाई नामक एक भिखारिन ने पाल-पोस कर बड़ा किया था । वस्तुतः कृष्णाबाई का पति रामचन्द्रन एक रेल-दुर्घटना में मर गया था । तबसे कृष्णाबाई भीख मांगने का काम करती थी , लेकिन उसके पास कोई बच्चा नहीं था । बच्चे वाली भिखारिनों को ज्यादा भीख मिलती थी । अतः कृष्णाबाई ने पांडुरंग मामा को बोल के रखा था कि कोई बच्चा उसके हाथ में आवे तो सबसे पहले उससे सौदा करे । पांडुरंग मामा जब अनाथाश्रम से शंकरिया को लाते हैं , तब सबसे पहले कृष्णाबाई से बात करते हैं — " बाई , नकद पचास की रकम और भान्जे का रिश्ता लगा करके इस छोकरे को खरीदा है । सूरत का गोरा और खूबसूरत है । भीख मांगते समय होशियारी से काम लोगी , तो चांदी पिटवा देगा छोकरा । किसी ऊँचे घराने की लक्ष्मी की औलाद मालूम पड़ता है । नामे का सिकन्दर निकलेगा । तो बाई , जब तक इस छोकरे से बिजनेस करोगी , एक रूपया रोज लूंगा और अगर तुम्हारी लापरवाही या बीमारी से लड़का मर गया तो तुम्हें पचास की रकम एकमुश्त मुझे देनी होगी । " 19

इतना सुनते ही कृष्णाबाई पांडुरंग मामा को कहती है - " अइयो , अइयो ! आइसा — कइसे होने का रे मामा ? फुटपाली और झोंपड़पट्टी का बच्चा लोग ज्यास्ती जिन्दा रह सकता है । बोले तो , यह तो एकदम मस्के की टिकिया का माफिक छोकरा है , ज्यास्ती तकलीफ बर्दाश्त नहीं करेगा । गया बरस हमको भी एक अइसा ही गोरा - चिट्टा छोकरा पैदा होने को था , मगर दूसरे च महीना अमर गुजर गया । बोले तो , अगर ये छोकरा भी गुजर गया , तो अपने पचास रूपये कहां से देने का ? " 20 कृष्णा-बाई की इस बात को सुनकर पांडुरंग मामा जो कहते हैं उससे इस पलित-दुनिया के घिनौनेपन का चेहरा सामने आ जाता है — " तो रैन दे रे फिर , हो गया तुम्हारा धंधा ! अरी , कमअकल ! जब तक जिन्दा रहेगा तब तक तो चांदी पिटवायेगा छोकरा तेरे लिये ,

मगर जिस मर गया , उस दिन अशर्फियां उगल देगा , अशर्फियां ।
बाई , फक्त एक गज लाल कपड़ा कफन के लिए खरीद करके अपने इस कलेजे के टुकड़े को माहिम के कब्रिस्तान में दफन करने या सोनपुर के स्मशान में फूंकने के लिए भीख मांगते-मांगते तू एक ही दिन में सौ-डेढ़ सौ पीट लेगी । और छोकरे की मिट्टी को इस सर्दी के मौसम में दो-तीन दिनों तक सही-सलामत रखना कोई बड़ी बात नहीं । और तीन दिनों में तो पूरे बम्बई शहर में फिराई जा सकती है मिट्टी ।"[21]

कृष्णाबाई भिखारिन थी , पर उसके पास एक मां का दिल था । वह शंकरिया को अपनी औलाद की तरह रखती है और एक दिन उसको बचाते हुए ही वह खुद ट्रेन के नीचे आ जाती है । उसके बाद शंकरिया ताराबाई के पल्ले पड़ता है । वह पांडुरंग मामा की भिखारिन रखैल है । शंकरिया की कमाई से ताराबाई का दारू का खर्चा निकल आता है । यही शंकरिया आगे चलकर जेबकतरा और उठाईगिर हो जाता है ।

(10) मिट्टी :

"मिट्टी" भी मटियानीजी की एक हृदयद्रावक कहानी है जो कहती है कि गलत हाथों में पड़ जाने के कारण किस तरह एक स्त्री की मिट्टी पलीद हो सकती है । कहानी की कथा-व्यथा-नायिका गनेशी नामकी एक औरत है । वह इलाहाबाद की सड़कों पर भीख मांग रही है । उसके दो बच्चे भी हैं । किसीने शादी का लालच देकर इस पहाड़ी स्त्री को फंसाया था और बाद में अपना मतलब निकलने के बाद छोड़ दिया था । जिन्दगी की धुरी जब एक बार गड़बड़ा जाती है तो वह निरंतर गड़बड़ाती ही रहती है । कहते हैं न कि बूंद की गई हौज से नहीं आती । फिर तो उसके जीवन और भी एक-दो पुरुष आते हैं । वे भी

उसे इस्तेमाल की वस्तु समझकर छोड़ देते हैं । इस तरह रहते मरद के वह विधवा-सा जीवन व्यतीत कर रही है और अपना तथा अपने बच्चों का पेट पालने के लिए इलाहाबाद की सड़कों पर भीख मांग रही है । जिस प्रकार "प्यास" की कृष्णाबाई ज्यादा भीख मिले इस हेतु एक बच्चे को रख लेती है, ठीक उसी तरह गनेशी लालमन नामक एक कोढ़ी को अपना "बिजनेस-पार्टनर" बना लेती है । यहां यह भी उजागर होता है कि कोढ़ियों के साथ जो औरतें होती हैं, जरूरी नहीं है कि वह उनकी औरतें हों ।

गनेशी लालमन कोढ़ी की गाड़ी खींचती है और उसकी गाड़ी को घुमाते हुए दो पैसे कमा लेती है । इसी क्रम में लालमन का गू-मूतर भी उसे साफ करना पड़ता है । लालमन ×××× जीभ का बड़ा चटोरा है । फलतः उसे दस्त लग गए हैं । फिर भी वह गनेशी से जलेबियां खाने की इच्छा व्यक्त करता है । गनेशी जब उसकी दवा लेने जाती है, तब डाक्टर के मुंह से किसी और मरीज के×× के संदर्भ में "डायाबिटीज़" के बारें में सुन लेती है कि उस रोग में मीठा जहर के समान होता है । अतः वह लालमन के मन में यह डर बिठा देती है कि उसे "डायाबिटी" है, ताकि वह अपने बच्चों के लिए दो पैसे ज्यादा जोड़ सकें । यहां लालमन के लिए उसके मन में जो चल रहा है उसका बड़ा ही मनोवैज्ञानिक ढंग का चित्रण देखिए —

"लालमन की मृत्यु की कल्पना करना, गनेशी के लिए, अपने आपको ही डराना है । सत्रह-अठारह वर्षों की फजीहत से भरी ज़िन्दगी के बाद अब थोड़ी-सी राहत मिली है । चार-पांच सौ भी लालमन के लुढ़कने के पहले किसी तरह जमा हो जाते, तो एक बार फिर से कहीं पान-बीड़ी की गुमटी लगाने की कोशिश करती ... जब भी कल्पना करती है कि ये दो बेटे मरते दम तक उसके साथ ही रहेंगे और चाहें रिक्शा-मजूरी करें, चाय-पान की गुमटी चलाएं, सास की तरह घर चलाने का अवसर उसे भी मिलेगा, तो गनेशी

बहुत भावुक हो उठती है ।" [22]

और इस प्रकार उसके भीतर एक संसार निर्मित होता चला जाता है । पर गनेशी निहायत स्वार्थी भी नहीं है । दो पैसे बचाने के लिए वह लालमन को "डायाबिटी" का डर तो दिखा देती है, पर कुछ समय के बाद खुद कहती है —" अब तो बस, इन दोनों पर प्राण टिके हैं । अपना खाया तो हराम लगता है, इनके मुंह में जाता दाना मोती है । ... और सुन, लालमन, अभी ऐसी कौन-सी लाइलाज हालत में तेरी बिमारी पहुंच गयी है । एक-दो जलेबी दही के साथ खा लिया करना ।" [23] और फिर उसके गोड़ दबाने बैठ जाती है । पर गनेशी के ये सपने भी मिट्टी हो जाते हैं, क्योंकि दूसरे ही दिन सवेरे लालमन की मृत्यु हो अवश्य जाती है । कहानी का अंत इस प्रकार है —" चलो रे छोकरो, यहां से चलें चलें । कहते हुए उसने दोनों बच्चों को अपनी छाती से लगाकर भींच लिया और फूट-फूटकर रो पड़ी ।" [24]

(ii) चील :

यह भी एक बड़ी हृदय-विदारक कहानी है । इस कहानी के केन्द्र में रामखेलावन नामक एक बच्चा है । उसकी मां का नाम सत-नारायणी है । उसका पति एक नंबर का शराबी था । उसकी ओर से उसे हमेशा लात, घूंसे और गालियां मिली है । परंतु जब उसकी मृत्यु हुई थी, तब सतनारायणी फूट-फूटकर रोयी थी । कहानी में चील का प्रतीकात्मक उपयोग हुआ है । एक बार रामखेलावन को उसके बाप ने गोश्त की पोटली घर ले जाने के लिए दी थी । वह उसे लेकर आ रहा था कि चील झपट्टा मारकर वह पोटली उसके हाथ से छीन ले जाती है । इस कारण बाद में उसकी पिटाई भी हुई थी । रामखेलावन को उसका बाप खूब मारता था, पर प्यार भी उतना ही करता था । जब भी बाजार से आता उसके लिए

कुछ-न-कुछ लाता था । जब उसका बाप शराब पीकर धुत होकर पड़ जाता । दादीमा पंखा करके उसके मुंह पर से मक्खियां उड़ाती थी । फिर वह उसके बाप की जेबें टटोलतीं थीं । पैसे हुए तो रख लेतीं और बिस्किट-गोलियां होतीं तो रामखेलावन को दे देतीं । वह दादी भी नहीं रही । छोटे-से रामखेलावन ने अपने सामने दो-दो मौतें देखी हैं । उसकी मां रामखेलावन को पालने के लिए दो-तीन घरों में काम करती थी । उनमें एक घर शुक्लाइन का था । रामखेलावन जब कभी मां के साथ उसके यहां जाता, तो लौटते समय शुक्लाइन उसकी जेबें तलाशती थी । कहीं कुछ चुरा न लिया हो । इसलिए रामखेलावन xxxxxxxxxxxxxxxx उसको नफरत करता था । बच्चे भी सामने वाले के दिल को ताड़ लेते हैं । कहावत है — " बड़े जाने किया और बच्चे जाने हिया । " मां रामखेलावन को बहुत प्यार करती थी । उसके सारे सपने अब उसको लेकर थे । वह उसकी अच्छे-से परवरिश करना चाहती थी । लेकिन आजकल उसकी भी तबियत अच्छी नहीं रहती थी । अक्सर खून कीकी उल्टियां हो जाती थीं । रामखेलावन खूब डर जाता था । मौत की बदहवासी में वह खेलावन से कहती है — " तू घबराना मत रे खिलावन । तनिक खटिया पर से उठें, तो तेरी परवरिश तो बैठवा हम ... " [25] मां बीमार है, अतः राम-खिलावन लावारिश की तरह इधर-उधर डोलता रहता है । लड़कों के साथ वह भी उन पैसों को बटोरने चला जाता है जो मुर्दों पर फेंके जाते हैं । जिस दिन उसकी मां मरी उस दिन भी वह कुछ पैसों को बटोरकर आ रहा था । उसके लिए उसने कल्लन ने झगड़ा भी किया था । जब वह कल्लन के हाथ से पैसे छीनकर आ रहा था तभी कल्लन जोर-जोर से कहता है —" जा साले, ले जा । घर पर तेरी अम्मां मरी पड़ी है । साले, तू भी तो बिखेरेगा पैसे अपनी अम्मां xx की ल्हाश पर ... " [26] आज फिर मौत रूपी चील खिलावन से उसकी मां को xxxx झपट्टा मारकर छीन ले गई थी ।

§12§ चिथड़े :

यह भी एक प्रतीकात्मक कहानी है । गँदी महाराष्ट्रके कोल्हापुर जिले का एक सीधा-सादा सामान्य-सा युवक है । मेहनत-मजदूरी करके और खेतीबाड़ी करके वह आराम से अपना जीवन बीता रहा था । एक बार उसका बचपन का दोस्त पांडु मुंबई से आता है । पांडु अब प्रीतम हो गया है । खूब फैशनेबल कपड़े पहनता है और गांव में हीरो बनकर घूमता है । गँदी उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ जाता है । वह उसे बम्बई के बड़े-बड़े ख्वाब दिखाता है । घर से खूब रूपये पैसे लेकर गँदी निकल पड़ता है । रात में पांडु उर्फ प्रीतम उसके पैसे मारकर नौ दो ग्यारह हो जाता है । गँदी का टिकट भी पैसे वाले बटुए में था । अतः बिना टिकट सफर करने के कारण गँदी को एक रात हवालात में काटनी पड़ती है । बाद में जब गँदी मुंबई पहुंचता है तब एक दूसरा "बम्बईगिरा" ठग उसे मिलता है । वह भी उसे मीठी-मीठी बातों में फुसलाकर उसका कम्बल और बिस्तरा मार जाता है । आखिरकार अपनी चांदी की करधनी को बेचकर गँदी पुनः अपने गांव पहुंचता है । इस प्रकार गँदी की कल्पना के रेशमी परदे मानवता के पलित चिथड़ों में बदल जाते हैं । इसमें मोहमयी बम्बई नगरी की फैशनेबुल नारियों का चित्रण है जो ऊंचे-ऊंचे हाई-हिल के सैण्डिल पहने मछलियों-सी फुदकती और फड़कती रहती हैं । उनकी वेशभूषा ऐसी होती है की करीब-करीब अधनंगी-सी दिखती हैं । दूसरी ओर जिन रेशमी परदों की बात पांडु करता था वह फोकलैण्ड रोड़ की वेश्याएं थीं, "जहां इन्सान कहाने वालों की मां-बहिनें पावडर-लिपस्टिक की भद्दी परतों से चेहरों को ढके हुए, सरे बाज़ार नारीत्व का सौदा करती हैं ।" [27] इस प्रकार यह गँदी के मोहभंग की कहानी है । प्रकारान्तर से इसमें लेखक ने बम्बई की पलित-जिन्दगी का चित्रण किया है । यहां का नंगापन दो तरह का है — मगरूर नंगापन और मजबूर नंगापन ।

§13§ पत्थर :

इसमें लेखक ने मुस्लिम-समाज में व्याप्त गरीबी का यथार्थ चित्रण किया है । यह एक मार्मिक और हृदय-परिवर्तन की घटना पर आधारित कहानी है । कहानी का नायक रमजानी एक नंबर का हरामखोर और निखट्टू आदमी है । पर उसकी बीबी गफूरन एक बावफा और मजहबी औरत है । इसे देखकर "महाभोज" कहानी की शिवरती की याद ताजा हो जाती है । वह अपने खाविन्द को खुदा का दरजा देती है । वह खूब मेहनत-मजदूरी करती है पर रमजानी के सारे शौक पूरे करती है और आये दिन उसे मटन-बिरयानी खिलाती है । रमजानी दूसरे लोग जो रात-दिन खटकर अपने बीबी-बच्चों को पालते थे उनका मजाक उड़ाया करता था और उनको जोरू का गुलाम और न जाने क्या-क्या कहता रहता था , सो एक दिन अहमदिया टोंचा मार देता है कि बीबी से बेटा पैदा करना कोई पान खाकर थूक देने जैसा काम नहीं है , यह काम तो मरदों का है । रमजानी भला कैसे बर्दाश्त करता ? वह अपनी बीबी को खूब प्यार करता है और कुछ ही दिनों में पता चलता है कि गफूरन अब पेट से है । रमजानी मिस्त्री को पालने का आर्डर दे देता है और मदीना चाची को भी खबर कर देता है कि वह बच्चे की जचकी के लिए तैयार रहे । शुरू-शुरू में तो रमजानी मरद बनकर फूला नहीं समाता , पर जैसे-जैसे वक्त गुजरता है रमजानी को मटन-बिरयानी तो क्या दाल-रोटी के भी "वांधे " पड़ जाते हैं , क्योंकि गफूरन अब पहले की तरह काम नहीं कर सकती थी । रमजानी अनुभव करता है कि "उसने मरदानगी नहीं , कोई बहुत बड़ी बेवकूफी कर दी है और उसका फल है कि भूखमरी भुगतनी पड़ रही है । " [28] और "मरद" बनने का उसका सारा उत्साह काफूर हो जाता है । अतः बच्चा जब पैदा होता है वह उसे पसंद नहीं करता और लिहाजा उसका नाम रखता है - "पत्थर" ।

रमजानी तो कोई काम करता नहीं था । बीबी की कमाई पर ऐश करता था । पर अब बच्चा हो जाने के कारण रमजानी भी उतना काम नहीं कर पा रही थी । अब खाने-पीने के भी लाले पड़ने लगे और बच्चा भी बगैर दूध-रोटी के भूखों मरने लगा । तब पड़ोस के कादर मियां एक प्रस्ताव लेकर आये । कादर मियां लंगड़े थे और भीख मांगने का काम करते थे । पर साथ में बच्चा न होने कारण कमाई उतनी होती नहीं थी । गफूरन को यह पसंद नहीं था कि उसका बच्चा यों भीख मांगता फिरे । पर फिर सोचा कि यों तो यह मर ही जायेगा । अतः वे लोग कादरमियां का प्रस्ताव स्वीकार लेते हैं । कादरमियां अपने वादे के पक्के थे । हररोज रमजानी को एक रूपया दे देते थे और उधर से गफूरन को छिपाकर चवन्नी दे देते कि वह उसे आड़े बखत के लिए बचाकर रखे । पर रमजानी का लोभ बढ़ गया । उसने गफूरन को कहा कि बच्चे को लेकर वह खुद भीख मांगने जावे । गफूरन को यह पसंद नहीं था , पर अपने खाविन्द को वह नाराज़ नहीं कर सकती थी —

"गफूरन खुदा से लड़ लेगी पर अपने शौहर से न लड़ेगी । "[29]

परंतु अपने शील-संकोची स्वभाव के कारण पांच-सात रूपये तो क्या उतने आने भी नहीं जुटा पाती थी । अतः एक दिन रमजानी कहता है — " खुदा के बन्दे अब रह कहां गये है बेगम । खामोश बच्चे को तो मां भी दूध नहीं पिलाती । कहती कि इस बच्चे का बाप मर गया है ।" [30] यह सुनना था कि गफूरन ने न आव देखा न ताव और रमजानी के मुंह पर एक तमाचा जड़ दिया । रमजानी गम के आंसू पी गया और दूसरे दिन से खुद निकल पड़ा बच्चे को लेकर मुंबई की लोकल ट्रेनों में । ट्रेन में रमजानी के बच्चे ने एक दूसरे बच्चे का बैलून फोड़ दिया । उस पर उस बच्चे के बाप ने रमजानी के बच्चे को एक करारा थप्पड़ जमा दिया । और तब रमजानी ने बिना इधर-उधर देखे उस आदमी को चार तमाचे तड़ातड़ जड़ दिये यह कहते हुए कि " मेरे बेटे पर

हाथ उठाता है ? तोड़ डालूंगा तेरे हाथ-पांव । भिखारी होगा तेरा बाप । " और अपनी बीड़ियों के लिए बचायी हुई दुअन्नी उसके मुंह पर मारकर अगले स्टेशन पर उतर गया । [31]
उस दिन से रमजानी पूरी तरह से बदल गया । वह मिल में नौकरी करने लगा और गफूरन अपने खाविन्द को जी-जान से प्यार करने लगी ।

§14§ गोपुली गफूरन :

यह मटियानीजी की एक बहुचर्चित कहानी है । इस कहानी को लेकर बाद में उन्होंने एक पूरा उपन्यास भी इसी नाम से लिखा है । गोपुली देवराम शिल्पकार की घरवाली है । देवराम टटहा है और तांबे के कलश बनाता है । पूरे अल्मोड़ा में अपनी इस कला के कारण वह जाना जाता है । किरपाल दत्त पुरोहित अपने जजमानों को तांबे के कलश देवराम से ही खरीदने की सलाह देते थे ।×× गोपुली कोई खास इतनी सुंदर नहीं थी पर न जाने उसके व्यक्तित्व में ऐसा क्या था कि पूरे अल्मोड़ा मैन बाजार के व्यापारी उसको देखकर लार टपकाते थे । देवराम के साथ जिनके लेन-देन के संबंध थे और जिन लोगों से देवराम को फायदा होता था , ऐसे लोग गोपुली से विशेष छेड़छाड़ करते थे और उनके गन्दे कामेण्ट्स और ठिठोलियां भी उसे बर्दाश्त करने पड़ते थे । शुरू-शुरू में गोपुली को यह सब बहुत अटपटा लगता था पर बाद में वह खुद उसकी इतनी अभ्यस्त हो जाती है और अपने रूप और जवानी का ऐसा नशा उस पर सवार होता है कि किसी दिन कोई यदि ऐसी कामेण्ट्स न करें तो गोपुली के जी को अच्छा नहीं लगता था । किरपाल दत्त पुरोहित गोपुली को महर्षि पाराशर की निषाद-पुत्री सत्यवती की कथा सुनाया करते थे । मुस्कुराते हुए गोपुली पूछती थी — " क्यों हो गुरु ? कलशों की जरूरत है ? मेरे देव-राम कह रहे थे कि गुरु से पूछ आना जरा । " गोपुली की इस बात को

सुनते ही गुरू गदगदान हो जाते और उसे अपने बगलवाले कमरे में खींच ले जाते और गोपुली के उरोजों पर हाथ फेरते हुए बच्चों की तरह फुसफुसाते हुए कहते — " गोपू ! मुझे तो तेरे कलशों की जरूरत है । " [32] गोपुली "कोई देख लेगा" की ब्रेक मारते हुए वहाँ से खिलखिलाती हुई निकल जाती । खीमसिंह होटलवाला गोपुली को " गजगामिनी , मिरगलोचनी , चन्द्रमुखी , मनमोहिनी कहता था " । [33] तो गोपाल शाह उसे कुत्ते के नीचे का कपास का गद्दा कहता था ।[34] ऐसा कहने के पीछे उसका आशय यह यह रहता था कि कहाँ गोपुली और कहाँ देवराम । वैसे खीमसिंह होटलवाला उसे "गजगामिनी" के स्थान पर "गजगाभनी" कहता था , जिस पर किरपाल गुरू उसे कई बार टोक चुके थे कि " यार ठाकुर , गजगामिनी होता है "गजगाभनी" नहीं । उसके जवाब में खीमसिंह कहता — " ऐसी मस्त तिरिया को गज के अलावा गाभन की कौन बना सकता है ? " [35] संक्षेप में गोपुली पर पूरा अल्मोड़ा बाजार लार टपकाता था , पर गोपुली अपने देवराम के अलावा किसीकी हुई नहीं थी ।

किन्तु देवराम की असमय मृत्यु के बाद सारा नक्शा ही बदल जाता है । खीमसिंह गोपुली को तो भटुवा-शिकार खिला सकता है , पर उससे उसके बालकों का पोषण कैसे होगा । किरपाल दत्त गुरु सहायता के लिए तैयार थे पर गोपुली को देवराम की वह कला आती नहीं थी । "जब तक मालिक , तब तक खालिक ! " वाली कहावत चरितार्थ होती है । बिरादरी वालों ने ऐसी पीठ फेरी कि आसरा देने की जगह ताने मारने लगे । साल बीतते-न- बीतते यह नौबत आ जाती है कि गोपुली को अपने बच्चों को पालने-पोसने के लिए अहमदअली पड़वाले के घर बैठ जाना पड़ता है और इस तरह "गोपुली" गोपुली से "~~गफूरन~~ गफूरन " हो जाती है । गोपुली के बेटों — हरराम और नरराम — का खतना करा दिया जाता है और अब वे हो जाते हैं — हसरत अली नसरत अली । इस

प्रकार लेखक ने हिन्दुओं की छोटी जातियों में होने वाली धर्मान्तरण की प्रक्रिया को भी स्पष्ट किया है और प्रकारान्तर से यह भी बताया है कि छोटी जातियों की स्त्रियों की छेड़ती करने में या उससे इश्क फरमाने में तो अगड़ी जाति के लोग बहुत आगे रहते हैं, पर कभी वास्तविकता में उसे सहारा देने की नौबत आ जावे तब सब पीछे हट जाते हैं ।

मटियानीजी की कुछ अन्य कहानियां :

उक्त कुछ कहानियों के अतिरिक्त "गरीबुल्ला", "दैट माय फादर वेलजी", "फर्क बस इतना है", "विट्ठल", "इब्बू-मलंग", "मैमूद", "भय", "रहमतुल्ला", "लाटी", "हत्यारे" आदि कुछ कहानियां हैं जिनमें किसी-न-किसी रूप में दलित-जीवन के कुछ चित्र मिलते हैं ।

"गरीबुल्ला" एक कलईगिर मुसलमान है । कलई के बर्तनों की नगरी मुरादाबाद से वह बम्बई आया है । मुरादाबाद में उसका अच्छा खासा नाम था, व्यवसाय था, प्यार करने वाली अम्मीजान तथा दिल से मुहब्बत करने वाली शमाबी बेगम से उसकी जिन्दगी जन्नत के समान थी । पर अम्मीजान और शमाबी बेगम दोनों जन्नतशीन हो गई । इस आघात को वह बर्दाश्त न कर सका और बम्बई चला आया । यहां वह भिखमंगों की जिन्दगी गुजार रहा है । "गरीबुल्ला" के माध्यम से लेखक यहां की दलित-पलित जिन्दगी का चित्रण करता है ।

"दैट माय फादर वेलजी" एक एब्सर्ड शैली में लिखी गयी कहानी है । इसमें एक पागल का प्रलाप है । परन्तु यदि उसके टुकड़ों को जोड़ा जाए तो एक दर्दनाक कहानी सामने आती है । इस कहानी में बम्बई के सौंठों की ऐयाशी को चित्रित किया गया है ।

कहानी में एक पागल बम्बई के वेलजी सेठ को अपना "फादर" बताता है । वेलजी सेठ अपनी दौलत की ताकत पर अनेक स्त्रियों के साथ ऐश करता है । मैडम क्रिस्तानो , उसकी बहन निवेदा तथा कथा-नायक की मां जो एक मराठी घाटन थी ऐसी अनेक स्त्रियों से उसके संबंध है । कथा-नायक की घाटन मां गंगाबाई अगर सेठ की रखैल बनकर रहती तो कोई बात न थी पर वह तो ब्याहता औरत की तरह अपने बेटे लल्लन-लालजी के लिए अधिकार की बात करती है और तब एक दिन सेठ अपनी इकसठवीं सालगिरह पर मां-बेटे दोनों को आमंत्रित करता है और वहां कुछ ऐसा घटित होता है कि गंगाबाई पागल होकर फ्लोरा-फाउण्टन के पास भीख मांगती है और बेटा भी पागलों की तरह चिल्लाता फिरता है ।

"फर्क बस इतना है " रघू और सद्दू नामक दो मित्रों की कहानी है । ये दोनों अनाथ थे और गांव से भागकर बम्बई आये थे । ~~अब~~ वे दोनों "पारिजात" में भाखरिया सेठ के यहां रामागिरी करते हैं । रघू कुछ सीधा-सादा , गरीब और सहनशील स्वभाव का है । लेकिन सद्दू कुछ मनमौजी और विद्रोही स्वभाव का है । अतः एक दिन भाखरिया सेठ उसे निकाल देते हैं । उसके बाद ~~अब~~ सद्दू जब भी रघू को मिलता है किसी नये भेष में मिलता है । रामा-गिरी छोड़कर वह स्टेशन पर कुलीगिरी करता है , उसके बाद भिखारी बन जाता है और उसके बाद जब वह मिलता है तब बाबाजी हो गया है और आगे किसी "मारूति-मंदिर में पुजारी बन जाने की उसकी प्लानिंग है । प्रत्येक बार जब सद्दू रघू को मिलता है तो अपने पिछले धंधे के कुछ नुक्श बताकर अपने नये काम की तारीफ करता है और प्रत्येक बार अपने तकिया कलाम " फर्क बस इतना है " का प्रयोग करता है । इस प्रकार यह एक व्यंग्यात्मक कहानी है और सद्दू के माध्यम से बम्बई की जिन्दगी के दस्तावेज को प्रस्तुत किया है जिसमें सेठ-सेठानियों की पोल-पट्टी खोली गई है तो दूसरी तरफ बम्बई में रहने वाले और दलित-गलित जीवन जीने वाले लोगों

की कथा-व्यथा को दर्द के साथ अंकित किया है ।

"विट्ठल" भी लेखक की बम्बई की पृष्ठभूमि पर आधारित कहानी है । "फर्क, बस इतना है" में जो बातें सद्दू ने संकेतात्मक ढंग से कही हैं, उन्हीं बातों को यहां विट्ठल खुल्लमखुल्ला नग्न ढंग से कहता है । इस संदर्भ में भटियानीजी के स्वयं के कथन को गौरतलब करना होगा — " मेरे लेखन में जो तथाकथित उग्रता, अभद्रता और अश्लीलता है, वह पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत होने वाले शोषण के तरीकों से कहीं बहुत अधिक मर्यादित, शिष्ट और इलील है । हिन्दी के अन्य लेखकों की तुलना में यदि मेरी रचनाओं में अधिक आक्रोश और बौखलाहट है, तो उसका एक मात्र कारण यह है कि मैंने आर्थिक और नैतिक व्यवस्थाओं के दुष्परिणामों को देखा-सुना ही नहीं, प्रत्युत सीधे स्वयं भोगा भी है ।" [36]

बम्बई के हजारों लावारिसों की तरह विट्ठल की जिन्दगी भी फुटपाथ से शुरू हुई थी । बूढ़ा ईरानी कहता है कि विट्ठल की मां करसनदास झवेरी की बीबी सोमावती है और उसका बाप गैना पठान है । वह बताता है कि जवानी के दिनों में सोमावती रुक्मा-बाई के यहां पिल हाउस में आती थी क्योंकि " करसनदास के पास लाखों के जवाहिरात थे, पर वे मोती न थे, जो एक पत्नी अपने पति से चाहती है । इन मोतियों की माला गूंथने सोमावती पिल हाउस पर गैना पठान के पास आती थी ।" [37]

"इब्बूमलंग" भी मुंबई की पृष्ठभूमि पर आधारित कहानी है । इसमें बम्बई की निम्न से निम्नतर प्रकार की जिन्दगी के कटु-कठोर-निर्मम यथार्थों को रूपायित किया गया है । कहानी इबादतहुसैन उर्फ इब्बू मस्तान उर्फ इब्बू मलंग के आसपास बुनी गई है । इसमें किस प्रकार कुछ न्यस्त हित वाले लोग किसी सामान्य बदमाश गंजेड़ी टाईप व्यक्ति को कोई महान बाबाजी, स्वामी या पीर-औलिया-मलंग बना देते हैं और फिर अपने हक में उसका

इस्तेमाल करते हैं इसको कलात्मक ढंग से उकेरा गया है । नागप्पा नबीपाड़ा का मशहूर दादा है । अपने वरली-मटका-जुगार-दारू जैसे गैरकानूनी कामों के फायदे के लिए वह "इब्बू मस्तान" को इब्बू मलंग बना देता है और फिर दोनों हाथों से गरीबों को लूटता है । नागार्जुन के उपन्यास "इमरतिया" में जमनिया मठ के बाबा तथा लक्ष्मीनारायण लाल के उपन्यास "प्रेम अपवित्र नदी" में स्वामी पंचानन का इसी प्रकार का प्रयोग बताया गया है । बाबा एक खूनी थे तो पंचानन एक नामी चोर था ।

"मैमूद" इलाहाबाद के खुल्दाबाद के मुस्लिम परिवेश की कहानी है । यह एक ऐसे मुस्लिम परिवार की कहानी है जिसने कभी अच्छे दिन भी देखे थे । यहां लेखक ने यह भी बताया है कि ऐसे लोग अपनी पुरानी झूठी शानो-शौकत के चक्कर में अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च करते हैं और फिर कर्ज के बोझ में दबे रहते हैं । यहां जद्दन बी के परिवार के माध्यम से समूचे खुल्दाबाद के मुस्लिम समाज और उसकी गरीबी को लेखक ने चित्रित किया है । "मैमूद" जद्दन बी का पालतू बकरा है । पर घर के एक प्रसंग को निबटाने के लिए जब "मैमूद" को हलाल किया जाता है, तब जद्दन बी पर क्या बितती है उसका मार्मिक चित्रण इस कहानी में हुआ है । एक स्थान पर जद्दन अपनी पड़ोसन रहीमन को कहती है — " अब तुझे यकीन नहीं ××××××× आयेगा, रहीमन । ये साला तो इन्सानों की तरह जज्बाती×× है । इन्सान जब बूढ़ा हो जाता है तब कोई उसे ऐसा चाहिए जो उसके "आ" कहने से आए और "जा" कहने से जाए ।" [38] और "मैमूद" जद्दनबी के लिए ऐसा ही एक सहारा है, पर वह सहारा भी गरीबी की भेंट चढ़ जाता है । उसकी वेदना और व्यथा को यहां कहानीकार ने रेखांकित किया है ।

"भय" कहानी भय , दहशत , बीभत्सता और मानवीय कुरूपता को सिद्दत के साथ रूपायित करने वाली कहानी है । कथा-नायक की कोई नाम नहीं दिया गया है । प्रथम पुरुष एक वचन में कहानी कही गई है । कथा-नायक "मैं" के पिता की जब मृत्यु हुई थी , तब अत्यन्त करुण स्वर में रोते-चिल्लाते हुए , कथा-नायक की मां कोई देख न जाए उस सतर्कता के साथ उसके पिता के जेबों को टटोलती है । जब भी "मैं" इस बात को सोचता है , तो उसे लगता है कि मूलभत जीवन-वृत्तियों के संदर्भ में देखें तो मनुष्य और जानवर में कोई बुनियादी अंतर नहीं है । कथा-नायक ने एक बार एक गाय को देखा था । एक बैल मरा हुआ था । उसके मुंह में केले का छिलका था और वह गाय उस छिलके को खींचकर खा रही थी । इस कहानी का विश्लेषण करते हुए डा. श्रमती सुषमा शर्मा ने लिखा है --" यहां गौरतलब मुद्दा यह है कि वह कौन-सी मजबूरी रही होगी कि एक पत्नी मरते हुए पति की जेबों को तलाशती है । दूसरे इस कहानी में जो सबसे भयानक स्थिति है , वह यह कि यहां मनुष्य की संभावना पर ही प्रश्नचिह्न-सा लग गया है और जो अमानवीय स्थितियां उभरकर आ रही है उनसे चित्त भयाक्रान्त हो जाता है ।" [40]

"रहमतुल्ला" कहानी के केन्द्र में रहमतुल्ला नामक एक बच्चा है । उसकी इजाजान (मां) खिमुली एक दलित जाति की स्त्री है । वह फतेउल्ला से निकाह पढ़ लेती है । जब खिमुली ने ऐसा किया था तभी उसके भाई उदेराम के लेखें तो वह मर गयी थी । पर बच्चा करम का इतना हेठा है कि उसके जनम के बाद पहले फतेउल्ला और बाद में खिमुली खुदा के प्यारे हो जाते हैं । तब मसीहा मस्जिद के अजानी मियां मुसीफुद्दौला कुछ दिन के लिए उसे पालते हैं , पर एक दिन डबल रोटी का टुकड़ा पकड़ाने में उनका पांव जो फिसला तो सीधे लोधिया कब्रस्तान तक ले गया उनको । इस प्रकार इस कहानी में रहमतुल्ला को केन्द्र

में रखकर दोनों वर्ग— गरीब मुस्लिम वर्ग और दलित-वर्ग — की दीन-हीन परिस्थितियों का बड़ा ही दर्दनाक चित्र उपस्थित किया है । बच्चे का नाम रहमतुल्ला है पर कोई उस पर रहम खाता नहीं है । रहमतुल्ला को देखकर चेखोव की कहानियों का "वानका" स्मृतियों में काँधने लगता है ।

"लाटी" एक दुखियारी औरत की कहानी है । लाटी कद-काठी और रूप-गुण की तो अच्छी है पर छोटी जाति की है और उमर से गूंगी है । उसके इस गूंगेपन का लाभ उठाते हुए बनारसी बुकसेलर ने उस पर बलात्कार किया था । शायद उसीका गर्भ वह ढो रही है । उसका एक मात्र सहारा डिगरराम था — काना , कलूटा और पलीत । जब वह मर जाता है , तब लाटी इतना विलाप करती है कि लोग चकित रह जाते हैं । ढाई मील तक वह डिगरराम की अर्थी के पीछे-पीछे जाती है और बड़ी मुश्किल से उसे अलग किया जाता है । यहां एक बात बता देना चाहते हैं कि कुमाऊं प्रदेश में यदि किसीके नाम के पीछे "राम" शब्द लगता है तो समझ जाना चाहिए कि वह चमार या डोम या भंगी जाति का होगा ।

"हत्यारे" एक राजनीतिक परिवेश से युक्त व्यंग्य-कहानी है । इसमें लेखक ने बड़ी खूबी के साथ बताया है कि बाबू संकटमोचन सिंह और चौधरी हरफूलचन्द जैसे लोग किस प्रकार अपने राजनीतिक फायदों के लिए दलित जाति के कुछ आर्थिक दृष्टि से संपन्न लोगों का इस्तेमाल करते हैं । रामचरण केवट गैरकानूनी तरीके से भैरोंवाली गली में एक तिमंजली हवेली खड़ी कर देते हैं । ज्वार के नेता लोग उसे सही बात समझाने के स्थान पर उसे तथा उसके युवा-बेटे को चने के झाड़ पर चढ़ा देते हैं । सूरजचन्द भट्ट उस हवेली को तुड़वाने लिए मयपुलिसदस्ता आ पहुंचता है । उस समय ये नेता लोग उसमें और हवा भरते हैं । परिणाम यह होता है कि रामचरण तैश में आकर पुलिस पर फायरिंग कर देता है और जवाबी फायरिंग में बाप-

बेटे दोनों मारे जाते हैं । रामचरण की बीबी रामरती विलाप कर रही है । चौधरी हरफूलचन्द की घरवाली घृणा और आक्रोश से कहती है — " रामरती , ई ससुर पुलिस लोगन का सत्यानाश होवे । ये हत्यारे तेरी गिरस्थी उजाड़ दिये हैं । " [41] तब रामरती साफ़-साफ़ सुना देती है — " पुलिस वाले तो शिवचरण के बाप के गोली चला बैठने के बाद गोली चलाये हैं । हमारे इनको तो सरकार ही नहीं मारी है , बाकि ई राक्षस ससुर ठाकुर संकटमोचन और तुम्हारे बुढ़ऊ हरफूल चौधरी भी मरवाय दिये हैं । " [42]

निष्कर्ष :

अध्याय के समग्रावलोकन से हम निम्नलिखित निष्कर्ष तक पहुंच सकते हैं :—

§1§ मटियानीजी की कहानियों में दलित-विमर्श के स्थान पर दलित-चिंतन अधिक मिलता है । उनकी दृष्टि किसी वाद या पूर्वाग्रह से प्रेरित नहीं है ।

§2§ उनकी कहानियों में जहां एक तरफ कुमाऊं का पहाड़ी ग्रामीण परिवेश मिलता है , वहां दूसरी तरफ नगरीय या महानगरीय परिवेश मिलता है । ग्रामीण परिवेश की कहानियों में जहां दलित-जीवन की ~~विडम्बनाओं~~ विडम्बनाओं और यातनाओं का यथार्थ चित्रण मिलता है वहां उसके मूल में प्राचीन शास्त्रानुमोदित वर्ण-व्यवस्था तथा जाति-व्यवस्था , उसकी जकड़बन्दियां और अन्ध-विश्वास आदि हैं ।

§3§ महानगरीय जीवन में लेखक ने जहां दलित-जीवन की भीषण गरीबी आदि का चित्रण किया है वहां उसके मूल में पूंजीवादी शोषण-व्यवस्था है ।

§4§ यहाँ बम्बई के उस जीवन को भी दलित-जीवन के अंतर्गत ही रखा गया है जो झोंपड़पट्टी और फुटपाथ के लोगों का है । यहाँ कोढ़ी हैं , भिखारी हैं , चोर-बदमाश , उठाईगिर , पाकेटमार, दादा-माफिया और गुण्डे लोग हैं ।

§5§ लेखक ने इस दलित-पलित जीवन जीने वाले लोगों में भी कहीं-कहीं इन्सानियत के दर्शन xxxxxxxxx करवाये हैं । तो कहीं-कहीं ख़ूंखार दादाओं और माफिया सरगनों को पिघलते और पसीजते बताया है ।

§6§ दलित जातियों में जो इधर नयी चेतना आयी है , राजनीतिक अधिकारों के प्रति सतर्कता और सावधानी देखी जाती है उसे भी रेखांकित किया है ।

§7§ इन कहानियों में जहाँ उन्होंने एक तरफ तथाकथित ऊँची और संपन्न जातियों के खोखलेपन को और उनकी वर्णसंकरी सृष्टि को व्यंग्यात्मक तेवरों के साथ उभारा है , वहाँ सड़ांध-भरा जीवन जी रहxx रहे लोगों में मानवीय मूल्यों को उकेरा है ।

§8§ इनमें कहीं कुछ ऐसे पात्र भी मिल जायेंगे जिनमें अभी कहीं थोड़ा-सा मनुष्य होने का अहसास बचा है , तो कहीं ऐसे पात्र भी हैं जो मनुष्य होने की चेतना को खो बैठे हैं ।

§9§ प्रेमचंद की भाँति मटियानीजी में भी कहीं-कहीं ऐसे नारी-पात्र मिल जाते हैं जो लाख गरीबी और विपदाओं के बावजूद अपने मान-सम्मान और "मरजाद" के लिए सतत जूझ रहे हैं । उनके जीवन को सलाम करने का मन होता है ।

===== xxxxx ========

:: सन्दर्भानुक्रम ::

§1§ " हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य " : अज्ञेय : पृ. 96 ।
§2§ पहाड़ : शैलेश मटियानी विशेषांक : सन् 2001 : पृ. 165 और 169 ।
§3§ वही : पृ. 174 ।
§4§ द्रष्टव्य : "पहाड़" के विभिन्न लेख : पृ. 5- 6 ।
§5§ कहानी : नंगा : बर्फ की चट्टानें : पृ. 165 ।
§6§ कहानी : प्रेतमुक्ति : एक दुनिया समानान्तर : सं. राजेन्द्र यादव : पृ. 372 ।
§7§ कहानी : घुघुतिया त्यौहार : बर्फ की चट्टानें : पृ. 562 ।
§8§ वही : पृ. 558 ।
§9§ कहानी : सतशुगिया आदमी : बर्फ की चट्टानें : पृ. 137 ।
§10§ कहानी : लीक : मेरी तैंतीस कहानियां : पृ. 132 ।
§11§ कहानी : महाभोज : छिद्दापहलवान वाली गली : पृ. 32 ।
§12§ से §14§ : वही : पृ. क्रमशः 33, 34, 40 ।
§15§ "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट §कहानी§ : मेरी तैंतीस कहानियां : पृ. 84 ।
§16§ वही : पृ. 86 ।
§17§ कहानी : दो दुःखों का एक सुख : बर्फ की चट्टानें : पृ. 545 ।
§18§ द्रष्टव्य : कहानी : प्यास : त्रिज्या : पृ. 117 ।
§19§ से §21§ : वही : पृ. क्रमशः 117, 117, 117 ।
§22§ कहानी : मिट्टी : त्रिज्या : पृ. 174
§23§ और §24§ : वही : पृ. क्रमशः 179-180 , 181 ।
§25§ कहानी : चील : त्रिज्या : पृ. 101 ।

विशेष : यहां पर जहां कहानी के संदर्भ दिए गए हैं , वहां प्रथमतः कहानी का नाम और उसके बाद उस संकलन का नाम दिया गया है जहां से उसे उद्धृत किया गया है ।

§26§ कहानी : चील : त्रिज्या : पृ. 103 ।
§27§ कहानी : चिथड़े : मेरी तैंतीस कहानियां : पृ. 37 ।
§28§ कहानी : पत्थर : मेरी तैंतीस कहानियां : पृ. 142 ।
§29§ से §31§ : वही : पृ. क्रमशः 145, 145, 146 ।
§32§ कहानी : गोपुली गफूरन : पापमुक्ति तथा अन्य कहानियां : पृ. 51 ।
§33§ से §35§ : वही : पृ. क्रमशः 48, 48, 48 ।
§36§ भूमिका : मेरी तैंतीस कहानियां : पृ. 25 ।
§37§ कहानी : विट्ठल : मेरी तैंतीस कहानियां : पृ. 74 ।
§38§ कहानी : मैमूद : त्रिज्या : पृ. 103 ।
§39§ कहानी : भय : त्रिज्या : पृ. 160 ।
§40§ "शैलेश मटियानी की कहानियों में नारी के विविध रूपों का चित्रण" : शोध-प्रबंध : पृ. 127-128 ।
§41§ कहानी : हत्यारे : भेड़ें और गड़रिये : पृ. 156 ।
§42§ वही : पृ. 157 ।

===== xxxxxxx ========